नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

कृषि कैबिनेट : निर्णयों का प्रभावी क्रियान्वयन जरूरी

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में सोमवार को बड़वानी जिले के नागलवाड़ी में आयोजित प्रदेश की पहली ऐतिहासिक 'कृषि कैबिनेट' केवल एक औपचारिक बैठक नहीं थी, बल्कि यह राज्य की नीति दिशा में एक प्रतीकात्मक और व्यावहारिक बदलाव का संकेत है. वर्ष 2026 को 'किसान कल्याण वर्ष' घोषित कर सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसकी प्राथमिकताओं के केंद्र में किसान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था हैं. 27,500 करोड़ रुपए के व्यापक वित्तीय पैकेज की घोषणा अपने आप में इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है. कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए 25,678 करोड़ रुपए की योजनाएं हों या बड़वानी जिले की दो बड़ी सिंचाई परियोजनाओं के लिए 2,068 करोड़ रुपए की प्रशासनिक स्वीकृति, ये निर्णय प्रदेश के कृषि ढांचे को मजबूती देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं. 15,500 हेक्टेयर भूमि को सिंचित करने का लक्ष्य न केवल उत्पादन बढ़ाएगा, बल्कि आदिवासी अंचलों में आय स्थिरता का आधार भी बनेगा.

कृषि कैबिनेट की एक बड़ी विशेषता इसका बहुआयामी दृष्टिकोण है. एकीकृत मत्स्य पालन नीति 2026 के तहत अगले तीन वर्षों में 3,000 करोड़ रुपए के निवेश और 20,000 रोजगार सृजन का लक्ष्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विविधीकरण की दिशा में साहसिक पहल है. इससे स्पष्ट है कि सरकार पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर संबद्ध गतिविधियों को भी समान महत्व दे रही है. पशु स्वास्थ्य के लिए 610 करोड़ रुपए और उद्यानिकी क्षेत्र में 1,739 करोड़ रुपए का प्रावधान यह दर्शाता है कि 'बीज से बाजार तक' की संपूर्ण श्रृंखला को सशक्त करने का प्रयास हो रहा है. 17 विभागों को एक मंच पर लाकर समन्वित रणनीति के तहत कार्य करना प्रशासनिक दृष्टि से भी एक बड़ा प्रयोग है. अक्सर योजनाएं विभागीय सीमाओं में उलझकर अपनी गति खो देती हैं. यदि यह समन्वय व्यवहारिक धरातल पर प्रभावी ढंग से स्थापित हो पाया, तो मध्यप्रदेश 'बगीचे से बाजार तक' की अवधारणा को सफल मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर सकता है.

नागलवाड़ी जैसे जनजातीय क्षेत्र में कैबिनेट का आयोजन और भगोरिया उत्सव को राजकीय पर्व का दर्जा देना यह संकेत देता है कि विकास केवल आर्थिक नहीं, सांस्कृतिक सम्मान के साथ भी जुड़ा है. मुख्यमंत्री और मंत्रियों का पारंपरिक जनजातीय वेशभूषा में उपस्थित होना एक प्रतीकात्मक संदेश था,सरकार केवल योजनाएं नहीं बना रही, बल्कि सामाजिक सरोकारों के साथ जुड़ने का प्रयास भी कर रही है. हालांकि, इन महत्वाकांक्षी घोषणाओं के साथ एक बड़ी चुनौती भी जुड़ी है,प्रभावी क्रियान्वयन. वित्तीय स्वीकृतियां और नीतिगत घोषणाएं तभी सार्थक होंगी, जब जमीनी स्तर पर पारदर्शिता, समयबद्धता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी. सिंचाई परियोजनाओं का समय पर पूरा होना, मत्स्य और उद्यानिकी योजनाओं में वास्तविक निवेश आकर्षित करना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पशु स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाना प्रशासनिक दक्षता की कसौटी होगी. डॉ. मोहन यादव का विजन स्पष्ट रूप से कृषि को केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि समग्र ग्रामीण समृद्धि का आधार मानता है. यदि यह विजन सतत निगरानी और मजबूत क्रियान्वयन तंत्र के साथ आगे बढ़ता है, तो मध्यप्रदेश वास्तव में 'किसान कल्याण वर्ष' को एक स्थायी परिवर्तन वर्ष में बदल सकता है. यह पहल प्रदेश को कृषि नवाचार और समावेशी विकास की दिशा में नई पहचान दिला सकती है.

होली वास्तव में एक वैदिक यज्ञ

आचार्य टेकनारायण उपाध्याय
वरिष्ठ अर्चक श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी

> वसन्त ऋतु के आगमन के स्वागत उत्सव के कारण होली वसंतोत्सव के रूप में मनाई जाती है. मदनोत्सव के पीछे यह रहस्य है कि मानव जीवन में धर्म, अर्थ और मोक्ष के साथ काम भी एक पुरुषार्थ के रूप में प्रतिष्ठित है. कामस्तदाग्रे संवर्ततााधिॉ कहकर वेदों ने भी इसे स्वीकार किया है. नृत्य-संगीत प्रभृति समस्त कलाएँ, हास-परिहास, व्यंग्य-विनोद तथा आनन्द और उल्लास इसी तृतीय पुरुषार्थ के नानाविध अङ्ग हैं. होलिकोत्सव के रूप में हिन्दू समाज ने मनोरञ्जन को जीवन में स्थान देने के लिये तृतीय पुरुषार्थ के स्वस्थ और लोकोपयोगी स्वरूप को धर्माधिष्ठित मान्यता प्रदान की है.

होली वास्तव में एक वैदिक यज्ञ है, जिसका मूल स्वरूप आज विस्मृत हो गया है. वैदिक काल में इस पर्व को 'नवान्नेष्टि' कहा गया है. इस दिन खेत के अधपके अन्न का हवन कर प्रसाद बांटने का विधान है. इस अन्न को होला कहा जाता है, इसलिए इसे होलिकोत्सव के रूप में मनाया जाता था. इस पर्व को नवसंवत्सर का आगमन तथा बसंतागम के उपलक्ष्य में किया हुआ यज्ञ भी माना जाता है. कुछ लोग इस पर्व को अग्निदेव का पूजन मात्र मानते हैं. मनु का जन्म भी इसी दिन का माना जाता है. अत: इसे मन्वादितिथि भी कहा जाता है. पुराणों के अनुसार भगवान शंकर ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था, तभी से यह त्योहार मनाने का प्रचलन हुआ.

सूनृतावन्त: सुभगा इरावन्तो हसामुदा:.
अतृष्या अक्षुध्या गृहा मास्मद् बिभीतन॥
(अथर्ववेद 7.60.6)

जिन घरों में रहने वाले परस्पर मधुर और शिष्ट संभाषण करते हैं, जिनमें सब तरह का सौभाग्य निवास करता है, जो प्रीति-भोजों से संयुक्त हैं, सभी हास और उल्लासमय जीवन-यापन करते हैं एवं जहाँ न कोई भूखा है न प्यासा, उन घरों में कहीं से भय का संचार न हो. हमारी संस्कृति मे होली का उत्सव तामसिक वृत्तियों के मुखर होने हेतु नियत किया गया है. इस दिन हमारी मर्यादित प्रकृति भी उन्मुक्त हो जाती है. आमोद-प्रमोद निर्बन्ध हो जाते हैं. उत्सव की इस सम्मोहनी शक्ति को हमारे द्रष्टा महर्षियों ने समझा था. उन्होंने यज्ञों में वसन्त को आज्य कहकर घोषित किया था-

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत.
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म: इध्म: शरद्धवि॥
(ऋग्वेद 10.90.6)

होलिकोत्सव का वर्णन भविष्योत्तर पुराण में इस प्रकार से किया गया है राजन शीतकाल का अन्त है. इस फाल्गुनी पूर्णिमा के पश्चात् प्रात: मुधमास होगा. सभी को आप अभय दीजिए. सभी रंग बिरंगे वस्त्र पहनकर चन्दन, अबीर और गुलाल लगाकर पान चबाते हुए एक-दूसरे पर रंग डालने के लिए पिचकारियाँ लेकर निकलें. जिनके मन में जो आए सो कहें. ऐसे शब्दों से तथा हवन करने से वह पापिनी (होलिका) नष्ट हो जाती है.

होली या वसन्तोत्सव का जो वर्तमान स्वरूप दिखाई पड़ता है वह हजारों वर्ष भारतवर्ष के पूर्व भाग में जो अनेक प्रकार की उद्यान-क्रीड़ाएं प्राचीनकाल में प्रचलित थी, वे इसी होली पर्व का ही एक अंग थीं. पाणिनि का प्राचांक्रीणायां (6,2,72) सूत्र इनका परिचायक है. वात्स्यायन ने उन्हें देश परम्परागत क्रीड़ाएं कहा है.

श्रीमद्भागवत (10-75-14.15) में वर्णन इस प्रकार मिलता है-गन्ध, माला, भूषण तथा वस्त्रों से अलंकृत पुरुष और स्त्रियाँ नदी में अवभृथ स्नान करने के लिए गईं. वहाँ युवतियाँ तेल, गोरस, सुगन्धित जल, हल्दी और कुंकुम आदि से एक-दूसरे को रंगने लगी. घत्तियी (चर्मयन्त्र) से अपने देवरों और प्रियजनों को भिगो रही थीं. ये घत्तियाँ ही आधुनिक पिचकारियों की आदिरूप थीं. महाकवि माघ (750 ई.) ने पिचकारी का वर्णन किया है. तप्त स्वर्ण के समान उज्जवल केशरिया रंग का विशाल स्नानाच्छादन, वस्त्र प्रक्षालन तथा प्रियजनों का सान्निध्य नारियों के जल क्रीड़ा के साधन थे.

प्रारम्भ में उत्सवों और पर्वों का आरम्भ अत्यन्त लघु बिन्दु से होता है, जिसमें निरन्तर विकास होता रहता है. सामाजिक आवश्यकताएँ इनके विकास में विशेष भूमिका निभाती हैं. यही कारण है कि होली जो मूलत: एक वैदिक सोमयज्ञ के अनुष्ठान से प्रारम्भ हुआ, आगे चलकर परम भागवत प्रहलाद और उनकी बुआ होलिका के आख्यान से भी जुड़ गया! गवामयन के अन्तर्गत महाव्रत के इस परिवर्धित और उपबृंहित पर्व-संस्करण में नवशस्येष्टि (नयी फसल के अनाज का सेवन करने के लिए किया गया अनुष्ठान) तथा मदनोत्सव अथवा वसन्तोत्सव का समावेश भी इसी क्रम में आगे हो गया.

आईये अब हम सब मिलकर यह संकल्प ले कि हम झूठ बोलकर किसी को हानि नही पहुंचायेगें

सच, झूठ और जनता का अतिंम निर्णय

लक्ष्मण सिंह
पूर्व सांसद

> आईये आप अब हम सब मिलकर यह संकल्प ले कि हम झूठ बोलकर किसी को हानि नही पहुंचायेगें या मानसिक प्रताडना नहीं देगें. हम ऐसा झूठ नहीं बोलेगें जिससे परिवारों में मतभेद पैदा हो, रिश्ते टूट जाये और पीढ़ियों तक रिश्ते नहीं बन सके. किसी अन्य की संपत्ति हड़पने के उद्देश्य से भी हम झूठ नही बोलें. अंत में हमारे मीडिया के साथियों से भी यही कहूँगा कि आप भी जनता की भलाई के लिये थोड़ा बहुत झूठ बोल ले लेकिन किसी को हानि पहुचें ऐसा झूठ नहीं बोले. दोनों राजनीतिक दल के साथियों से आग्रह है कि अगर आप इस लेख को पढे तो आप भी देश को हानि हो ऐसा झूठ न बोलें.

मेरे भोपाल प्रवास पर मैं हमेशा वेरायटी बुक स्टोर, न्यू मार्केट से पढने के लिये पुस्तके वर्षों से क्रय करता आ रहा हूँ. दुकान के मालिक से भी कई सारगर्भित विषयों पर चर्चा होती रहती है क्योंकि वो भी कांग्रेस पार्टी के शुभ चिंतक है और मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है. हाल ही में मेरे भोपाल प्रवास पर मैंने उनसे एक बहुत ही रोचक विषय पर पुस्तक क्रय की. अंग्रेजी में है और पुस्तक का नाम है अर्थात् झूठों से हम घिरे हुये है. इसके लेखक है थॉमस एरिक्सन.

उस पुस्तक की मुख्य बात यह है कि अगर किसी अच्छे कार्य के लिये झूठ बोलना पड़े तो वह कोई पाप नही है, परंतु अगर किसी को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से झूठ बोला जाये तो वह महापाप है. मैं उनसे सहमत हूँ, हालाकि बचपन में हमारे माता-पिता बुजुर्ग, गुरूजी ने हमेशा सत्य के पथ पर ही चलने को ही कहा है जिसका अनुसरण जितना हम कर सकते थे हमने किया परंतु राजनीति में प्रवेश के बाद सच बोलना हानिकारक सिद्ध होने लगा तो फिर झूठ बोलना भी सीखना पड़ा. मेरे मित्र और परिवार के सदस्य मेरे चेहरे के हाव-भाव देखकर बता देते है कि मैं सच बोल रहा हूँ या झूठ क्योंकि मैं राजनीति में 40 वर्ष बिताने के उपरांत भी सफेद झूठ बोलना नहीं सीख पाया जैसा कि आजकल के नेता चेहरे पर बिना कोई हाव-भाव लाये बिना बोल लेते है चाहे वह किसी भी दल के हो.

कांग्रेस तो सत्य, अहिंसा के रास्ते पर चलने वाली पार्टी है जिसमें आजकल सत्य बोलने वालों की संख्या बहुत तेजी से कम होती जा रही है, भाजपा तो हिटलर के सिद्धांतो वाली पार्टी है और हिटलर के मुख्य सलाहकार गोबल्स के कहने पर चलती है कि झूठ बार-बार बोलो जब तक वह सत्य नहीं हो जाता. मध्यप्रदेश में हम मुख्यत: इन दोनों दलों के सहारे ही है क्योकि यहां कोई तीसरा दल नहीं है जिसका जनाधार हो. दोनों पार्टी के नेता दिखावे के लिये लडते है और बंद कमरे में बैठ कर बड़े-बड़े भ्रष्टाचार के मुद्दो पर समझौता कर कई वर्षों से सरकार चला रहे हैं. इन दोनों दलों के सहारे हम आप सब (जनता%) है और इसलिये पुस्तक का शीर्षक Surrounded By Liars भी प्रासंगिक प्रतीत होता है. इनकी मिली भगत की राजनीति का ही परिणाम है कि प्रदेश लगभग 5 लाख करोड़ के कर्जे में है, मैं दोनो दलों का सांसद भी रहा हूँ और आप सोच रहे होगें कि मैं उनके बारे में ऐसा क्यों कह रहा हूँ जिन्होने मुझे चुनाव में लड़ने का अवसर दिया.

मूल बात यही है कि मैं इनके झूठ और भ्रष्टाचार से समझौता नहीं कर पाया. मै स्वंय को भी ईमानदार नहीं मानता क्योंकि ईमानदारी से आप राजनीति में सफल नहीं हो सकते, परंतु मुझे इस बात की खुशी है और सतुंष्ट भी हूँ कि मेरे ऊपर कोई भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं है और न ही कोई भ्रष्टाचार का मुकदमा मेरे ऊपर चल रहा है जैसे कि दोनों दलों के कई नेताओं के ऊपर चल रहा है. मेरे जैसे बहुत सारे लोग दोनों दलों के है जो आज दोनों दलों की मिली जुली, अत्यंत भ्रष्ट, झूठ बोलने वाली राजनीति से दुखी होकर घर बैठे है. उनसे मेरा आग्रह है कि आप मैदान में आईये और हम प्रदेश को इन दोनों दलों के नेताओं के भरोसे नहीं छोड़ सकते जो काला धन खर्च कर वोट खरीद का जीत जाते है और बाकी का समय और अधिक काला धन कमाने में बिताते है जिससे कि अगला चुनाव वह कैसे जीत सके.

आज समय है कि हम हमारी युवा पीढी को एक सही दिशा में ले जाये क्योंकि नेताओं द्वारा अपने स्वार्थ के लिये उन्हें जाति और धर्म में बाटा जा रहा है. कुछ नेता तो अन्य देशों की भांति देश में अराजकता फैलाना चाहते हैं और राष्ट्र हित के विपरीत भी जाते है जैसा हमने हाल में देखा. अगर हम झूठ भी बोले तो श्रीकृष्ण जैसे बोले जैसा कि महाभारत के 193 अध्याय में द्रोणाचार्य वध के समय युधिष्ठर से कहलवाया था कि अश्वाथामा हत: अर्थात् अश्वाथामा मारा गया. अश्वाथामा एक हाथी था और द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम भी अश्वाथामा था. मारा गया हाथी था और द्रोणाचार्य समझे कि उनका पुत्र मारा गया है और उन्होंने यह सुनकर अपने प्राण त्याग दिये. यह झूठ अवश्य था लेकिन मानवता की भलाई के लिये कहा गया था और धर्म स्थापना के लिये बोला गया था.

रणजी ट्रॉफी में जम्मू-कश्मीर का जलवा

पिछले 10 सीजन में रणजी ट्रॉफी में 5 अलग-अलग टीमें जीती हैं. विदर्भ ने 3 बार तथा सौराष्ट्र, मध्य प्रदेश व गुजरात ने यह ट्रॉफी जीती. जम्मू-कश्मीर की टीम ने कर्नाटक जैसे सबल प्रतिद्वंद्वी को हराया, जिसके पास कई नामी खिलाड़ी थे.

अपनी कड़ी मेहनत और स्व. बिशनसिंह बेदी, अजय शर्मा, इरफान पठान व मिथुन मिन्हास के मार्गदर्शन में जम्मू-कश्मीर की क्रिकेट टीम ने अपने को इतना मजबूत और सक्षम बनाया कि उसने फाइनल में कर्नाटक को धूल चटाकर पहली बार रणजी ट्रॉफी जीत ली. घरेलू क्रिकेट के इस सबसे बड़े परंपरागत टूर्नामेंट में पारस डोगरा ने कप्तान के रूप में जम्मू-कश्मीर टीम को इस उपलब्धि तक पहुंचाया, जिसकी किसी को कल्पना भी नहीं थी. इस टीम के सफल गेंदबाज अकीब नबी ने 10 मैचों में 60 विकेट लिए. इस युवा गेंदबाज की प्रतिभा और हौसला देखते हुए उसे राष्ट्रीय टीम में शामिल किया जा सकता है. जम्मू-कश्मीर टीम की यह शानदार जीत इस बात का प्रमाण है कि आतंकवाद की लपटों से बाहर आकर अब यहां के युवा खेल जगत में अपने हुनर का परचम लहरा रहे हैं. एक स्थिरता व शांतिपूर्ण माहौल में सुविधाएं दिए जाने में प्रतिभा कैसे पनप सकती है, उसका यह जीता-जागता प्रमाण है. पिछले 10 सीजन में रणजी ट्रॉफी में 5 अलग-अलग टीमें जीती हैं. विदर्भ ने 3 बार तथा सौराष्ट्र, मध्य प्रदेश व गुजरात ने यह ट्रॉफी जीती. जम्मू-कश्मीर की टीम ने कर्नाटक जैसे सबल प्रतिद्वंद्वी को हराया, जिसके पास कई नामी खिलाड़ी थे. कर्नाटक टीम में करुण नायर, केएल राहुल और देवदत्त पडिक्कल जैसे धाकड़ प्लेयर थे. जम्मू-कश्मीर टीम के गेंदबाज अकीब नबी ने फाइनल में मैच के तीसरे दिन इन तीनों के विकेट लिए. इसके पहले दिलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन के खिलाफ गेंदबाजी करते हुए अकीब ने 4 गेंदों में 4 विकेट लेने का कमाल दिखाया था. जब बिशनसिंह बेदी जैसे भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान जम्मू-कश्मीर टीम के कोच थे तब वह खिलाड़ियों को मैदान पर खूब दौड़ाते थे ताकि उनकी स्टैमिना बढ़े. आज यह टीम अपने धाकड़ बल्लेबाजों और कुशल तेज गेंदबाजों पर गर्व कर सकती है जिनका आत्मविश्वास और हुनर देखते ही बनता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

दोषमुक्ति से हो गए खुशहाल आम महिला पार्टी बनाएं केजरीवाल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, शराब घोटाले के मामले में दोषमुक्त हो जाने के बाद अब आम आदमी पार्टी के नेता व दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल को क्या करना चाहिए?'

हमने कहा, 'उन्होंने आम आदमी पार्टी बनाकर अधूरा काम किया. अब उन्हें जेंडर भेद न करते हुए आम महिला पार्टी बनाकर महिलाओं को समुचित महत्व और प्रतिनिधित्व देना चाहिए. उन्हें समझना चाहिए कि हर सफल आदमी के पीछे किसी महिला का हाथ होता है. नीति कहती है कि अब उन्हें अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल को सक्रिय राजनीति में उतार देना चाहिए, जो दिल्ली की बीजेपी मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को सीधी टक्कर दे सकें.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, केजरीवाल, महिलाओं का पहले से ख्याल रखते आए हैं. मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने महिलाओं को मुफ्त बस सेवा का उपहार दिया था. मुफ्त राशन, बिजली पानी के बिल में कटौती कर गृहिणियों को राहत दी थी.'

हमने कहा, 'सिर्फ बस में मुफ्त घुमाना काफी नहीं है. केजरीवाल को चाहिए था कि दिल्ली की महिलाओं की शॉपिंग का बिल सरकारी खजाने से भरते. उनकी किटी पार्टी का खर्च खुद उठाते. दिल्ली के सारे ब्यूटी पार्लर को निर्देश देते कि महिलाओं के फेशियल, मैनीक्योर, पैडीक्योर, हेयर कलरिंग, शैम्पू, बाल घुंघराले करने, हेयर स्टाइलिंग, भौंहों को कमानीदार बनाने का बिल सीधे उनके पास भेजते. केजरीवाल को शिवराजसिंह चौहान और देवाभाऊ से कुछ सीखना चाहिए था. महाराष्ट्र की महायुति को लाडकी बहीण दिखाई दी, लेकिन केजरीवाल ने दिल्ली में किसी लाड़ली बहन को नहीं खोजा. वह चाहते तो लाड़ली चाची, मौसी, भाभी, भतीजी, भानजी के नाम पर योजना चला सकते थे. एक विकल्प लाड़ली साली योजना भी हो सकता था. अब भी देर नहीं हुई है. पंजाब में उनकी पार्टी की भगवंत मान सरकार है, वहां ऐसी योजना बनाकर महिलाओं का सम्मान करते हुए उनके खाते में पैसे डालें.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12188 - डॉ. सागर खादीवाला

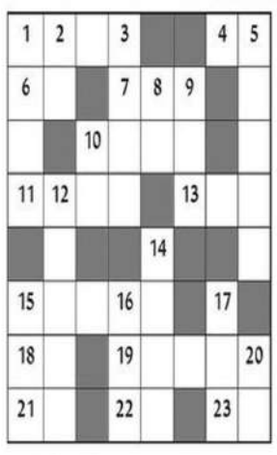

1. तनाव, खिंचाव 2. मांगने का कार्य, याचना, तलब, बालों को संवारकर और अलगाकर बनाई हुई रेखा 3. पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक 5. एक बादशाह द्वारा बनवाया गया अप्रतिम मकबरा 8. झारखंड की राजधानी 9. सौ का समूह 10. भोजनालय, एक प्रकार की घास, निवास स्थान 12. कर लगाना (सं.) 14. बहुतायत, अधिकता 15. टपकने या चूने की क्रिया 16. दवा के काम में आने वाला एक पौधा, इसके फूल का हलका नीला रंग (उर्दू) 17. पाप, गुनाह 20. बचाव, हिफाजत

बाएं से दाएं
1. सेना-नायक (अं.) 4. पत्नी, सुंदर स्त्री 6. तरकारी, शाक 7. सार, संक्षेप 10. वार्तालाप 11. वह स्थान जहां सिक्के बनाए या ढाले जाते हैं 13. मुख से निकलने वाली दुखसूचक शब्द ध्वनि 15. दूसरों की भलाई करना 18. किसी मंत्र नाम या वाक्य का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण 19. दो या अधिक रेखाएं जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अंतर पर रहें 21. लड़ाई, युद्ध, जंग 22. जल, पानी 23. परिधि, घेरा, दर्जा, श्रेणी
ऊपर से नीचे

Solution 12187

का	व्य	र	सि	क			म
फि		ग		र	हा	स	हा
र	ब	ड़		व	र	दा	न
	बु	ना	व	ट		शि	व
पी	ला		र्ण		न	व	मी
क		वि	ना	श	क		
दा	स		ती		ल	लि	त
न	फ	र	त		ची	ख	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भवन संबंधी विवाद का सामना करना पड़ेगा, व्यर्थ वाद विवाद से मतभेद बढ़ेगा, वर्ष के मध्य में रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार व्यवसाय में प्रगति होगी, राज सम्मान एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार में प्रगति होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख प्राप्त होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मनोबल में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा और सम्मान की प्राप्ति होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्योंमें सफलता प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, हंसमुख, मिलनसार, अपने कार्य के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार होगा. अपने मन की बात दूसरों पर प्रकट नहीं करेगा. मित्रों की संख्या अधिक होगी, किन्तु वास्तविक मित्रों का अभाव रहेगा. दूर दूर घूमने का शौकीन होगा.

मेष- आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. व्यापार की योजना बनेगी. अतिथि आगमन होगा. निजी दायित्वों की पूर्ति का योग है.

वृषभ- पराक्रम में वृद्धि होगी. नये लोगों के प्रति रूचि रहेगी. अधिक जल्दबाजी न करें. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. परिश्रम अधिक करना होगा.

मिथुन- अपनों के कारण मुश्किल हो सकती है. आय में कमी होगी. कामकाज में बाधा आने का योग है. परिश्रम की अधिकता रहेगी, खर्च अधिक होगा.

कर्क- आज का दिन शुभ एवं अनुकूल रहेगा. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण विचार विमर्श होगा. अतिथि आगमन होगा. प्रसन्नता बनी रहेगी.

सिंह- राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण योजनाओं पर विचार विमर्श होगा. व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

कन्या- स्वास्थ्य में सुधार होगा. कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी. व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा. मानसिक संतोष बना रहेगा. प्रापर्टी के कार्य बनेंगे.

तुला- सहयोगी आपकी मेहनत का लाभ उठायेंगे. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. यश मिलेगा. सोचे कामकाज में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक- शारीरिक सुख एवं पारिवारिक शांति के लिये समय अनुकूल रहेगा. जीवनसाथी के सहयोग से अवरोधों का निवारण होगा. पदोन्नति का योग बन सकते हैं.

धनु- पारिवारिक मित्रों से मुलाकात सुचाद रहेगी. व्यर्थ के वाद विवाद को टालना हितकर रहेगा. वार्ता उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध होगी.

मकर- परिजनों पड़ौसियों का अनायास विवाद हो सकता है. नवीन योजना बनेगी. कामकाज बनने का योग है. लाभदायक अवसरों, को हाथ से न जाने दें.

कुम्भ- श्रम साध्य कार्यों में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी. प्रवास का योग है. आमोद प्रमोद पर खर्च होगा. आलस्य को त्यागना हितकर रहेगा.

मीन- सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी. मन: स्थिति संतोषजनक रहेगी. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. भाई से मदद प्राप्ति का योग है. धर्म कर्म में आस्था बढ़ेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

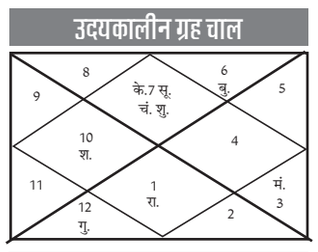

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण प्रतिपदा बुधवासरे शाम 4/15, पूर्वाफल्गुनी नक्षत्रे दिन 7/17, धृति योगे दिन 8/43, कौलव करणे सू.उ. 6/13, सू.अ. 5/47, चन्द्रचार सिंह दिन 1/27 से कन्या, पर्व- होली वसन्तोत्सव, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक-7,9,3.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से तांबा, पीतल, एवं कपास, सन् की लाईन, पूर्व की तरह चलेगी. गेहूँ, जौ, चना, मोट, मूँग, ज्वार बाजरा, आदि में नरमी रहेगी. वायदा मार्केट में आज के बने भाव उँचे व नीचे महत्वपूर्ण साबित होंगे. भाग्यांक 4853 है.

SUDOKU 7320

2						5		
	1			8				9
7					4			
			9			1		
	3						6	
		8			5			
			3					8
5				6			2	
		4						7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7319

2	3	6	8	5	1	4	9	7
9	4	5	7	6	3	8	2	1
1	7	8	2	9	4	6	5	3
3	1	9	6	7	2	5	4	8
5	6	2	1	4	8	3	7	9
7	8	4	5	3	9	1	6	2
4	9	1	3	2	5	7	8	6
8	2	7	4	1	6	9	3	5
6	5	3	9	8	7	2	1	4